श्याम निर्मोही की पांच नज़्में

-1-

भूख से बिलखती पथराई आँखों-सी
मेरी कविता है.....पाँवों में छालों-सी

छैनी के निरंतर प्रहार से गढ़-अनगढ़
मेरी कविता है.....हथेली में गाँठों-सी

बेशक ये मेरी रोज़ी-रोटी नहीं किंतु
मेरी कविता है.....लड़ते हालातों-सी

जाति की बात पर आहत हर ओर से
मेरी कविता है...चुभती हुई बातों-सी

सदियों से ओक मांडे अमृत को तरसे
मेरी कविता है...उखड़ीं हुई साँसों-सी

जूझती जूण की जैसे आख़री आरज़ू
मेरी कविता है.....सुबकती आहों-सी

हँस कर सह लेती भारी ज़िम्मेदारियाँ
मेरी कविता है....बोझ तले काँधों-सी

'निर्मोही' चिंगारियों को जन्म देती हुई
मेरी कविता है .....पथरीली राहों-सी

-2-

किसी को बदगुमानियाँ ले डूबी
तो किसी को नादानियाँ ले डूबी

किसी को सुरा-कबाबी शौक तो
किसी को अय्याशियाँ ले डूबी

रात को आई यकायक बरसात
तो सारे छज्जे छानियाँ ले डूबी

नदी अपना दर्द गुनगुना तो लेती
मगर लहरों की रवानियाँ ले डूबी

पसीने ने पत्थरों पर निशाँ छोड़े
धूप तो वही निशानियाँ ले डूबी

सफ़ेद डोर का पाश कैसे समझे
मुस्कुराती मेहरबानियाँ ले डूबी

कैसे उभरता अंधी रिवायतों से
झूठी कल्पित कहानियाँ ले डूबी

निशाना साध पाता 'निर्मोही' पर
जंग खाई तीर कमानियाँ ले डूबी

-3-

नहीं कोई वाद-विवाद करूँगा
बस सीधा-सीधा संवाद करूँगा

घर फूंक कोई चले हमारे साथ
तो कबीरा-सा निनाद करूँगा

पानी से तर-बतर हो ये हलक़
तो सारे नारे ज़िन्दाबाद करूँगा

सूखी रोटी सिलबट्टे पर पीसूँगा
तो भूख का अनुवाद करूँगा

फूस की झोपड़ी में दीया जले
तो उजाले का साधुवाद करूँगा

नभ का सीना चीरकर नारों से
भीम क्रान्ति का नाद करूँगा

निर्मोही पीले पत्ते हरे हो जाए
तो ही ये ज़िस्म आज़ाद करूँगा

-4-

थाम कर हाथ अपनों को उठाते रहिए
रिश्तों को इसी तरह से निभाते रहिए

कभी तो फूटेगी मुहब्बत की चिंगारी
दो पत्थरों को आपस में टकराते रहिए

आसान नहीं होते हैं रास्ते मंजिलों के
कभी हटते रहिए तो कभी हटाते रहिए

ये ज़िन्दगी तो इक प्यार का नग़मा है
कभी गाते तो कभी गुनगुनाते रहिए

समझ आ जाएगी जोड़-ओ-बाकी भी
कभी जोड़ते तो कभी घटाते रहिए

मिटेगी सरहदों की दूरियाँ भी, उस पार
कभी जाते रहिए तो कभी बुलाते रहिए

निर्मोही कभी भी संवाद खत्म न करिए
कभी सुनते तो कभी सुनाते रहिए

-5-

बागबाँ ने ही बग़िया जला डाली
रंग बिरंगी तितलियाँ जला डाली

सर कहाँ छिपाती मासूम गौरेया
बरसात ने छतरियाँ जला डाली

ज़हरीली हवा के पागलपन ने तो
निर्दोषों की बस्तियाँ जला डाली

चरवाहा ढूँढता रहा सूना रेगिस्तान
जंगल ने तो बकरियाँ जला डाली

बच भी जाता डूबता मांझी मगर
समंदर ने ही कश्तियाँ जला डाली

यादें भी अब पराई-सी हो गई है
विरहन ने हिचकियाँ जला डाली

यांत्रिकता के इस बद्तर दौर ने
माँ बाबा की चिट्ठियाँ जला डाली

रोटी का स्वाद चूल्हे की तपन
माँ ने फिर उंगलियाँ जला डाली

निर्मोही इन्साँ की झूठी मगरूरी ने
बड़ी से बड़ी हस्तियाँ जला डाली

श्याम निर्मोही

सोहनी सदन, सोहन कोठी के पीछे, अंबेडकर सर्किल के पास, मारुति गैराज वाली गली,
बीकानेर, राजस्थान -334001. फोन नं. 8233209330, ईमेलः shyamnirmohi78@gmail.com